आचार्य श्री कनकनंदी विधान

आशीर्वाद एवं संपादन

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी

दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री

आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक :

श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

कचनेर (गट नं. 11-12) औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

Email : dharamrajshree@gmail.com

पुस्तक का नाम	:	**आचार्य श्री कनकनंदी विधान**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव** **वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव**
आशीर्वाद एवं संपादन	:	**आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
विशेष सहयोग	:	**मुनि श्री सुविज्ञसागरजी, मुनि श्री सुयशगुप्तजी** **मुनि श्री अध्यात्मनन्दीजी, मुनि श्री चन्द्रगुप्तजी**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
सहयोग	:	**आर्यिका श्री सुवत्सलमती माताजी** **आर्यिका सुनिधिमति माताजी, आर्यिका सुनीतिमति माताजी** **क्षु. श्री सुवीक्षमति माताजी, क्षु. धन्यश्री माताजी** **ब्र. केशर अम्मा, ब्र. सोहनलाल जी**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	**1000**
संस्करण	:	**प्रथम, वर्ष-2015**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		**1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ** **2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332** **3. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922** **4. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687** **5. श्री राजेश जैन (कैबल वाले), नागपुर 9422816770** **6. श्री पवन पहाड़िया, इन्दौर 8982511540**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** फोन : 0141-2313339, मो.नं. : 9829050791 Email : shahsundeep@rocketmail.com rajugraphicart@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृ.नं.
1.	ज्ञानमहर्षि गुरुदेव का विधान	आचार्य गुप्तिनंदीजी	4
2.	विशाल दृष्टिधारी व्यक्तित्व व कृतित्व	मुनि सुविज्ञसागरजी	5
3.	स्वयं की पहचान कराने वाले गुरुदेव	मुनि सुयशगुप्तजी	7
4.	संत महन्त मेरे लिये साक्षात् अरहंत (भगवंत)	आर्यिका आस्थाश्री माताजी	8
5.	मुझे तो बृहस्पति लगते हैं गुरुदेव	आर्यिका सुवत्सलमती माताजी	12
6.	अध्यात्मवादी वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री गुरुदेव	आर्यिका सुनिधिमती माताजी	13
7.	अभौतिक आत्म तत्त्व की खोज करने वाले मेरे गुरुदेव	आर्यिका सुनीतिमती माताजी	14
8.	विधान का मांडला		15
9.	विधान प्रारम्भ		16
10.	विधान की प्रशस्ति		27
11.	वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का चालीसा	आचार्य गुप्तिनंदीजी	28
12.	आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की गीतांजलि	आचार्य गुप्तिनंदीजी	30
13.	सच्चिदानंदमय 'मैं' स्वभावी श्रमणाचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की आरती		31
14.	सर्वगुण सम्पन्न मेरे गुरुवर		32

ज्ञानमहर्षि गुरुदेव का विधान

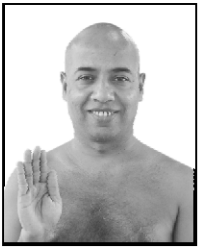

हमारे मार्गदर्शक, पथदर्शक, जीवनदर्शक, शिक्षागुरु, सिद्धांत चक्रवर्ती, ज्ञान–विज्ञान दिवाकर, विश्व धर्मप्रभाकर, अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, स्वाध्याय तपस्वी वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव के पुनीत दर्शन 18 वर्षों के बाद हुए। गुरुदेव ने खूब ज्ञानानंद का कलाकंद खिलाया। प्रवचन सार के माध्यम से अध्यात्म का अमृत पिलाया। अपने वात्सल्य के सागर में स्नान कराया और अनुभव के अनमोल मोती हम सबको भेंट दिये। जिसे इस संसार में आपके अलावा कोई नहीं दे सकता। आधुनिक ज्ञान–विज्ञान से परे परा विज्ञान का गूढ़ ज्ञान रखने वाले, ज्ञान महर्षि की आध्यात्मिक, अनमोल, अनुपम, अकल्पनीय अध्यात्मिक सम्पदा को पाकर हम अभिभूत हैं। ऐसे महान् ज्ञानयोगी आचार्य गुरुदेव के स्व–पर विश्व महान् कल्याणकारी व्यक्तित्व पर उनकी ही शिष्या **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने वैज्ञानिक धर्माचार्य **''श्री कनकनंदी विधान''** बनाया है। आपने मात्र तीन दिनों में ये विधान बनाकर महान् पुण्य का संचय किया है और **'आशु कवियित्री'** स्वयं को सिद्ध किया है।

जो स्फूर्तिवान हैं और महान् गुणों की खान हैं ऐसे गुरुदेव पर तीन दिन में विधान बन जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। अपने गुणवान गुरुदेव की गुणगाथा को विधान में पिरोकर माताजी ने अगले भव में केवलज्ञान को पाने का पक्का पुण्य संचय किया है। मेरे अनुभव के अनुसार जो भी इस युग के महान् ज्ञान, विज्ञानी आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव का विधान करेगा, वह ज्ञान, विधान, विद्या, यश, सुख, शांति पाता हुआ सर्व मनोरथ को सिद्ध करेगा।

मेरे पूज्य गुरुदेव को प्रणाम करते हुए माताजी को अविराम मोक्ष प्राप्ति का आशीर्वाद देता हूँ और विधान के पूजक, पाठक, प्रकाशक आदि सभी को सद्ज्ञान वृद्धि का आशीर्वाद देता हूँ।

–आचार्य गुप्तिनंदी

7 अप्रैल 2015, अमरपुरा (राज.)

विशाल दृष्टिधारी व्यक्तित्व व कृतित्व

आधुनिक महाकवि व लेखक आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव

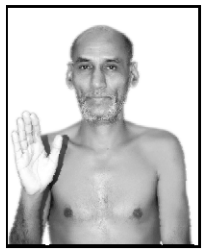

आधुनिक काल एवं परिवेश में भी प्राचीनता व आधुनिकता के समन्वित बहु आयामी व्यक्तित्व जिनमें एक साथ दार्शनिक–वैज्ञानिक–लेखक–चिन्तक–महाकवि–शिक्षा प्रचारक–समाज सुधारक–आध्यात्मिक सन्तत्व आदि अनेक विध गुण–ज्ञान–तप–साधना–नवाचार–नवोन्मेष–प्रगतिशीलता–उदारता–मधुरता–सर्वजीव समभाव–अन्त्योदय से लेकर सर्वोदय जैसे वैश्विक स्व–पर विश्वकल्याणकारी सार्वभौमिक–सार्वकालिक–अग्रगामी सुभावों का प्रायोगिक सर्वसमावेशी व्यक्तित्व–कृतित्व व भविष्य समाहित है, ऐसे सतत् ज्ञानोपयोगी दर्शन–ज्ञान–चारित्ररूपी रत्नत्रय की साकार मूर्ति का नाम है– श्रमणाचार्य भगवन्त श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव। जिनका बाल्यकाल से ही मानव जीवन के महान् आध्यात्मिक उद्देश्यों को प्राप्त करने का लक्ष्य रहा है। पूज्यतश्री ने बचपन में ही तीन महान् स्वप्न देखे– (1) मैं महान् क्रान्तिकारी नेता बनूँगा या (2) मैं सनम्र सत्यग्राही वैज्ञानिक बनूँगा या (3) मैं वैश्विक आध्यात्मिक भाव दृष्टि सम्पन्न सन्त बनूँगा।

आपने उपरोक्त तीनों लक्ष्य अपने वर्तमान आरम्भिक साधनाकाल से लेकर वर्तमान के आचार्य पद पर आरूढ़ रहते हुए साकार कर लिये हैं, जिसके अन्तर्गत आपने अपने जीवन काल में ज्ञान–ध्यान व तपोरक्त रहते हुए आध्यात्मिक विराटता व गरिमा के साथ एकान्त मौन निस्पृह साधना में रत रहते हुए प्राचीन से लेकर अद्यतन समस्त उपलब्ध ज्ञान–विज्ञान की अनेक विधाओं पर अपनी अनवरत सशक्त लेखनी के द्वारा अब तक प्रायः 240 साहित्यिक कृतियों का लेखन कर एक अभूतपूर्व, अद्वितीय, अनूठा, अकल्पनीय महत् कार्य किया है। आपने अब तक गद्य–पद्यमय विविध विधा–भाषा का प्रयोग करते हुए प्रायः गद्यात्मक 205 ग्रन्थों का सृजन किया है एवं प्रायः 35 ग्रन्थ पद्यात्मक गीताञ्जलि धारा रूप में सृजित किये हैं। इन उच्च वैश्विक साहित्य को देश–विदेश के विश्वविद्यालयों व विश्वधर्म संसद से लेकर शैक्षणिक संस्थानों–क्षेत्रों–वाचनालयों आदि में सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त होता

जा रहा है। भारत के 14 प्रदेशों में अब तक प्रायः 200 से अधिक साहित्य कक्षों की स्थापना हो चुकी है एवं उपरोक्त साहित्य पर सनम्र–सत्यग्राही, प्रगतिशील, जिज्ञासु शोधार्थी से लेकर वैज्ञानिक प्रोफेसर्स जन पी.एच.डी., डी. लिट्, एम.फिल. कर रहे हैं। जिसमें सभी वर्गों के शोधार्थी निरपेक्ष–भाव से रूचि लेकर अध्ययन व शोध कर रहे हैं जैसे दिगम्बर, श्वेताम्बर, हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई आदि। आचार्यश्री के विविध विषयक साहित्य को यू.जी.सी. से भी मान्यता प्राप्त है एवं पूज्यश्री के शिष्य केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के सम्मानित सलाहकार भी नियुक्त हुए हैं। उपरोक्त वृहत् साहित्य में प्राचीन से लेकर आधुनिक विज्ञान की समस्त विधाओं जैसे– इतिहास, भूगोल, न्याय, राजनीति, कला, गणित, काव्य, संगीत, पर्यावरण, स्वास्थ्य, आयुर्वेद, मेडिकल साइंस, शिक्षा मनोविज्ञान, जीव विज्ञान, भौतिक–रसायन विज्ञान, ब्रह्माण्डीय–विज्ञान से लेकर आध्यात्मिक विज्ञान के साथ समस्त देश–विदेश के पौर्वात्य (प्राच्य) से लेकर पाश्चात्य दर्शन आदि विषयों व विधाओं के समन्वित स्वर अनुगुञ्जित हुए हैं। ऐसे श्रेष्ठ साहित्य सृजनकर्त्ता समन्त–भगवन्त आचार्य परमेष्ठी को प्राप्त कर यह रत्नगर्भा वसुन्धरा भारत भूमि से लेकर वैश्विक परिवेश अत्यन्त आल्हादित, आशान्वित व गौरवान्वित हुआ है।

उपरोक्त अपूर्वार्थी के साहित्य माध्यम से अनेक विद्याओं से लेकर आधुनिक विज्ञान की सूक्ष्मतम जिज्ञासाओं व गुत्थियों से लेकर उनके अनसुलझे रहस्यों का त्वरित समाधान करने में सक्षम व समर्थ ऐसे पुरोगामी दस्तावेजों के रूप अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह साहित्य देखा जा रहा है, जिसका प्रत्यक्षीकरण देश–विदेश के आगन्तुक ज्ञानी–विज्ञानी जन गुरुदेव की स्वाध्याय कार्यशाला, चर्चा–वार्ता, वैज्ञानिक संगोष्ठी आदि गतिविधियों के माध्यम से इनोवेशन व मोटिवेशन रूप में निरन्तर प्राप्त कर प्रगतिशील हो रहे हैं, जो एक युग परिवर्तनकारी घटना स्थिति है।

आचार्यश्री के इस व्यापक व्यक्तित्व व कृतित्व के परिणामस्वरूप देश–विदेश के लाखों विद्यार्थी गुरुदेव के प्रबोधनात्मक धर्म–दर्शन–विज्ञान के शिविर व वैज्ञानिक संगोष्ठी आदि से लाभान्वित होकर अपने–अपने क्षेत्र में अग्रणी व प्रगतिशील बने हुए हैं, जिसमें अब तक 34 प्रशिक्षण शिविर व 14 राष्ट्रीय–अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी आदि की महती भूमिका है।

शुभाकांक्षा : श्रमण मुनि सुविज्ञसागर

स्वयं की पहचान कराने वाले गुरुदेव

दोहा– सूरि कनकनंदी गुरु हैं आध्यात्मिक संत।
उनके चरणन नित नमूँ, करूँ कर्म का अंत।।

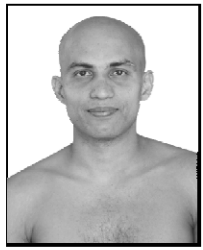

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव जो कि एक उच्च कोटि के अध्यात्मवेत्ता, दार्शनिक, वैज्ञानिक संत हैं। आपके गुणों को लेखनी के माध्यम से शब्दों के बंधन में बांधना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आपने अभी तक आगम विज्ञान प्रकृति, जैन–जैनेत्तर विषयों एवं अध्यात्म के ऊपर अपनी लेखनी चलाते हुए अनेक ग्रंथ–महाग्रंथ व गीताञ्जलि की रचना की है जिसके माध्यम से आज जैन–जैनेत्तर आचार्य, मुनि, साधु–साध्वी व देश–विदेश के वैज्ञानिक बोध को प्राप्त हो रहे हैं। और गुरुदेव के आशीर्वाद से स्वकल्याण के साथ–साथ जैनधर्म व दर्शन का देश–विदेश में प्रचार कर रहे हैं।

अभी तक तो मैंने अपने गुरुदेव (आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी) से आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव के ज्ञान–गहन चिंतन, अनुशासन, वात्सल्य आदि के बारे में दीक्षा से लेकर अभी तक सुना ही था पर 1 अप्रैल 2015 का वह दिन मेरे लिये एक महान् अवसर था जो ऐसे महान् विज्ञान पुरुष के मुझे दर्शन प्राप्त हुए। स्वाध्याय तपस्वी के श्रीमुख से मैं कौन यह विषय जानकर 'मैं' के बारे में जो अज्ञानता थी वह दूर हुई तो ऐसा लगा कि आज पहली बार स्वयं को जाना। स्वयं के द्वारा स्वयं की पहचान कराने वाले गुरुदेव के चरणों में कोटिशः नमन–वंदन।

ऐसे ही महामना के गुणानुवाद के लिये हमारी **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** ने **'आचार्य कनकनंदी विधान'** लिखा है जो एक बहुत ही सराहनीय कार्य है। प्रस्तुत विधान के माध्यम से सभी भक्तों को गुरुदेव के समान गुणों की प्राप्ति हो और आर्यिका आस्थाश्री माताजी को भी स्वात्मोपलब्धि प्राप्त हो यही शुभकामना एवं आशीर्वाद।

–मुनि सुयशगुप्त
(शिष्य : आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

संत महन्त मेरे लिये साक्षात् अरहंत (भगवंत)

दोहा–परम तपस्वी आप हैं, समता के भंडार।
कनकनंदी गुरुदेव को, नमन करूँ शत बार॥

परम पूज्य वात्सल्य रत्नाकर परम तपस्वी शांत मुनि वैज्ञानिक धर्माचार्य ज्ञान विज्ञान दिवाकर, आगमवेत्ता, सिद्धान्त प्रवक्ता, सत्य–साम्य सुख का मार्ग दिखाने वाले सांसारिक द्वंद–फंद से दूर रहने वाले मम दीक्षा शिक्षादाता आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव के पावन चरण कमल में मेरा सिद्ध, श्रुत, आचार्य भक्तिपूर्वक नमन, वंदन, नमोऽस्तु..

मेरा अति भाग्य है कि जो मुझे ऐसे ज्ञानी गुरु मिले। गुरुदेव के ज्ञान से हर व्यक्ति परिचित है। सच्चा ज्ञान प्रदान करने वाले आगमनिष्ट ऐसे गुरुदेव के पास हर व्यक्ति अपने आप खींचा चला जाता है। गुरुदेव की चुम्बकीय शक्ति अतिऊर्जा से युक्त है, उनकी भावना हरेक जीव के कल्याण की है। वो सबको सिद्ध बनाना चाहते हैं, ज्ञानी बनाना चाहते हैं।

मेरी दीक्षा होने के बाद पहला चातुर्मास सागवाड़ा (राज.) में हुआ। चातुर्मास के बाद में गुरुदेव से आज्ञा लेकर गणिनी आर्यिका राजश्री माताजी धर्म प्रभावना के लिये अलग विहार कर गई। उन्हीं के साथ में मैं भी गई थी।

18 वर्षों के बाद पुनः आचार्य भगवन् के मुझे दर्शन हुए। गुरुदेव के दर्शन से मन में इतनी प्रसन्नता और आनंद हुआ जिसको मैं बया नहीं कर सकती। जिस प्रकार एक गाय का बछड़ा दिनभर अपनी माँ से दूर रहता है और शाम को गाय के आने का इंतजार करता है। गाय के आने पर उसे जो आनंद होता है, गाय का प्रेम मिलता है, उससे भी कई गुणा आनंद गुरुदेव को देखकर हुआ गुरुदेव का इतना वात्सल्य और प्रेम मुझे मिला जिसका वर्णन करना भी अशक्य है। गुरुदेव से ज्ञानामृत भोजन प्राप्त करके मेरा मन भी उनकी भक्ति करने को लालायित हो उठा।

गुरुदेव मेरे लिये साक्षात् भगवान हैं। गुरुदेव के कारण ही मुझे सम्यक्त्व का मार्ग मिला है। जब मैं घर में ब्रह्मचारिणी बनकर रह रही थी तब तक मैंने कभी भी आचार्य श्री कनकनंदी गुरुदेव का नाम भी नहीं सुना था। जब गुरुदेव का बिजौलिया (राज.) में चातुर्मास हुआ और मेरा भाग्य का उदय हुआ। गुरुदेव की अनुकंपा मेरे ऊपर हुई, उनका वात्सल्य तो क्या बताऊँ, जिनको चाहिये वो स्वयं गुरुदेव के पास आकर देखले।

गुरुदेव के वात्सल्य और ज्ञान ने ही मुझे दीक्षा के लिये प्रेरित किया। गुरुदेव के दीक्षागुरु गणाधिपति गणधराचार्य कुंथुसागरजी गुरुदेव। गुरुदेव ने अपने दीक्षागुरु से मेरी दीक्षा करवाई। संसार में किसी-किसी का ऐसा परम सौभाग्य होता है जिनको दीक्षा देने वाले और शिक्षा देने वाले दो-दो गुरु मौजूद हो। उनका वात्सल्य और प्रेम उन शिष्यों को मिलता है।

मैं अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझती हूँ क्योंकि मुझे दो नहीं, तीन गुरुओं का आशीर्वाद मिलता है। 3 अंक रत्नत्रय का प्रतीक है। रत्नत्रय की शुरूआत ही आस्था से होती है, वही मेरा नाम है। मैं सभी गुरुओं से यही आशीर्वाद चाहती हूँ। मुझे शीघ्र ही मोक्ष मिले। तीसरे आचार्य है जिनके साथ मैं इतने (18) वर्षों से रह रही हूँ। वो हैं आचार्यश्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव।

आचार्य भगवन् को दर्शन करने के बाद मेरे भाव विधान बनाने के हुए। गुरुदेव में तो इतने गुण हैं कि मैं अपनी छोटी बुद्धि से उनके गुणों का वर्णन नहीं कर सकती। परन्तु उनके कुछ गुणों को मैंने छंदोबद्ध करने का प्रयास किया है। गुरुदेव से आशीर्वाद लेकर मैंने यह कार्य प्रारम्भ किया है। अति अल्प समय में यह विधान मेरा पूरा हो गया है। गुरुदेव की ऊर्जा शक्तियों का प्रत्यक्ष उदाहरण मैंने देखा और अनुभव किया है। गुरुदेव के आशीर्वाद में कितनी शक्ति है, वह हम कार्य होने पर समझते हैं।

मैंने अभी तक सात विधान लिखे हैं परन्तु इतने कम समय में कोई भी विधान नहीं लिखा। लेकिन गुरुदेव के ऊपर लिखा विधान का यह एक मेरे लिये चमत्कार है जो कि यह विधान तीन-चार दिन में ही पूरा हो गया। यह

विधान मैंने चैत्र शुक्ला चतुर्दशी शुक्रवार को रात्रि में 9 बजे शुरू किया देवपुरा (राज.) में दिनांक 3-4-2015 को और 6-4-2015 सोमवार वैशाख कृष्णा दोज को देवपुरा में पूरा भी हो गया। यह सब आचार्यश्री का विशेष आशीर्वाद है।

इस विधान का नाम **'श्री कनकनंदी विधान'**। यह विधान मैंने प.पू. प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव की प्रेरणा एवं मेरे अंदर के भावों से प्रेरित होकर लिखा है। इस विधान का संपादन भी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव ने किया है। मैं जो भी विधान या कहानियाँ लिखती हूँ, उन सबमें चार चाँद लगाने का कार्य आचार्यश्री करते हैं। अपनी कलम से हर वाक्य को महका देते हैं। अपनी कलम से कमल बना देते हैं।

आचार्य भगवन् का विशाल ज्ञान हर एक वस्तु को सूक्ष्म रूप से छू रहा है। इतना गहरा अध्ययन गुरुदेव का है। हम तो उनके चरणों की धूल ही बन जाये, उनके ज्ञान का एक अंश भी हमारे अन्दर आ जायेगा तो हमारा बेड़ा पार हो जायेगा।

समुद्र की गहराई से गहरा है उनका ज्ञान।
आकाश की ऊँचाई से ऊँचा है उनका ध्यान॥

मुझे आश्चर्य होता है कि गुरुदेव तो पूजा-पाठ एवं पंचकल्याणक आदि में अधिकांश नहीं जाते, न ही दिखते फिर भी उनको उस विषय का कितना ज्ञान है। वह हमें जब उनके द्वारा लिखित कविता और उनके द्वारा बताये गये अनुभव एवं उनके चरणों में बैठकर स्वाध्याय सुनने पर पता चलता है। गुरुदेव ने गद्य और पद्य रूप में अनेक ग्रन्थों की रचना की है।

ऐसे मेरे पूज्य गुरुदेव दीर्घायु हो, हरएक प्राणी उनसे पढ़े लिखे, इनका लाभ उठाये, अपने अज्ञान अंधकार को मिटाये। गुरुदेव के अंदर राग-द्वेष, भेदभाव, तेरा-मेरा, ख्याति पूजा नाम की बिल्कुल भी भावना नहीं है। उनकी पवित्र भावना, उनको शीघ्र ही तीर्थंकर जैसे महान् उच्च पद को दिलायेगी, तीर्थंकर बनायेगी। गुरुदेव को एकांत में रहना और अधिक समय मौन रहकर

साधना करना और 'मैं' को प्राप्त करने का ही लक्ष्य उन्होंने बना रखा है। गुरुदेव का मंत्र सत्य, साम्य सुख को पाने का है। गुरुदेव के विषय में जितना लिखूँ उतना कम है। उनके विशाल गुणों का वर्णन करने में असमर्थ हूँ। मैं नवकोटि से त्रय भक्तिपूर्वक गुरुदेव को नमोऽस्तु करती हूँ। जो पद पाने का आपका लक्ष्य है वही पद मुझे भी प्राप्त हो।

तीनों गुरुदेव के चरणों में त्रय भक्ति से नमोऽस्तु। सभी साधुओं को नमोऽस्तु। आर्यिका माताजी को प्रति वंदामि, द्वय क्षुल्लिका माताजी को धर्मवृद्धि रस्तु। ब्र. केशरबाई (अम्मा जी) को समाधिरस्तु एवं ब्र. सोहनलाल जी बाबा को आशीर्वाद।

इस विधान में 50 अर्घ हैं और एक पूर्णार्घ है। यह विधान जो भी भक्त भक्ति से करेगा, उसके सारे दुःखों का निवारण होगा। उसके अन्दर भी आचार्यश्री के समान समता और शांति आयेगी। उनके समान ज्ञानी बनकर एक दिन मोक्ष का अधिकारी बनेगा।

इस विधान में जो मंत्र लिखे हैं वो सभी मैंने सिद्धचक्र विधान में से लिखे हैं। कुछ मंत्र विधान से और कुछ मंत्र आचार्य भगवन के 36 मूलगुण में जो मुख्य हैं उनको मंत्र में लिखे हैं। विधान में मेरे द्वारा कुछ त्रुटि हुई हो तो सभी मेरे आराध्य गुरुजन क्षमा करें।

इस विधान के प्रकाशक, दानदाता को आशीर्वाद।

– आर्यिका आस्थाश्री

10-4-2015 देवपुरा (राज.)

मुझे तो बृहस्पति लगते हैं गुरुदेव

इस वसुधा पर अलौकिक वृत्ति के धनी, अद्वितीय, अजेय, अजातशत्रु, निष्कलंक, सहज–सरल, सांसारिक मोह–माया से दूर, जिन्हें ख्याति–पूजा–प्रसिद्धि की चाह नहीं, ईर्ष्या–घृणा–मात्सर्य से कोसों दूर, प्रति समय समता भाव में ही विचरने वाले ऐसे कोई संत हैं तो वे हैं हमारे स्वाध्याय तपस्वी, वैज्ञानिक शिष्य, भक्तों के मार्गदर्शक, भोली सरल मेवाड़–बागड़ की जनता के उद्धारक आचार्य भगवन्त कनकनन्दी गुरुदेव।

सतत सहजानन्द, आत्मानन्द में रहकर स्वानुभूति करते हैं गुरुवर। इस धरा पर ऐसी कोई विधा नहीं जिसका सांगोपांग ज्ञान गुरुदेव को ना हो। मुझे तो वे साक्षात् बृहस्पति लगते हैं। उनकी वात्सलमयी अनुकम्पा से हम/मैं उनकी निश्रा में ज्ञानामृत पान कर रहे हैं। उनके उपदेशामृत से मेरे जीवन में चिंतन की धारा ही बदल गई। कैसी भी परिस्थिति हो, अनुकूलता में फलती नहीं, प्रतिकूलता में संक्लेश नहीं होता वरन् चिंतन करने को अवकाश मिलता है।

ऐसे गुरुवर की प्रथम शिष्या **आस्थाश्री माताजी** ने मिलन के अवसर पर अपने हृदय में जो गुरुदेव प्रति 'आस्था' है उसके अनुरूप मात्र तीन दिन में विधान की सुमधुर स्वर व शब्दों में रचना की। इस गुरु गुणानुवाद में मेरी भी अनुमोदना व्यक्त करती हूँ।

–आर्यिका सुवत्सलमती

अध्यात्मवादी वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री गुरुदेव

दोहा– छत्तीस गुण समग्गे, पंच विहाचार करण संदरिसे।
सिस्साणुग्गह कुसले, धम्माइरिये सदा वंदे।।

छत्तीस मूलगुणों के धारक पंच आचारों से युक्त, शिष्य के अनुग्रह करने में कुशल ऐसे अन्यान्य गुणों से सहित वैज्ञानिक धर्माचार्य कनकनंदी जी गुरुदेव के श्रीचरणों में बारम्बार नमोऽस्तु–नमोऽस्तु–नमोऽस्तु।

सत्य, समता एवं शांति की मन्त्र साधना से साधित जिनका जीवन है, जैनधर्म के वैज्ञानिक गुढ़तम रहस्यों के शोध–बोध में ही जिनकी रुचि जाग्रत है, आध्यात्म के नित नवीन चिन्तन से जिन्होंने अपने चारित्र को विशुद्ध किया है ऐसे सरलमना गुरुदेव का पावन व्यक्तित्व समस्त साधक एवं श्रावकजनों के लिए प्रेरणास्पद एवं अनुकरणीय है। महापुरुषों के संसर्ग में बिताया हुआ एक क्षण भी आत्मा का हितकारी होता है। ऐसे महामना गुरुदेव के चरण सान्निध्य में मुझे लगभग दो साल तक रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गुरुदेव निरन्तर ज्ञानाभ्यास में ही रत रहते हैं। उन्हें ज्ञानामृतरूपी भोजन में ही इतना आनन्द आता है कि आहार की वेला हो जाने पर भी क्षुधा निवृत्ति की स्मृति नहीं रहती। अपनी स्वस्थ आत्मा के प्रति जाग्रत गुरुदेव साधना में सहकारी अनुकूल ही आहार करते हैं। राग–द्वेष, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, हर्ष–विषाद जैसे विभाव भावों से मुक्त गुरुदेव निरन्तर स्वभाव में स्थित आत्मगुणों का ही चिन्तन करते रहते हैं। एक वाक्य में कहे तो गुरुदेव आध्यात्मवादी वैज्ञानिक धर्माचार्य हैं जिनसे ज्ञान विज्ञान के रहस्य को जानने के लिये देश–विदेश के कई विद्वान्, प्रोफेसर, कुलपति, वैज्ञानिक सतत् उत्सुक रहते हैं।

गुरुदेव के गुणों में अनुरक्त एवं श्रद्धा से आपूरित पूज्या आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने **'आचार्य कनकनंदी विधान'** कृति की रचना की है। यह विधान सभी भक्तजनों के लिए कल्याणकारी है। माताजी ने सुन्दर छन्द अलंकार सह भावमय रचना की है। माताजी को मेरी शुभकामना और वन्दामि। गुरुदेव के चरणों में पुनश्च नमोऽस्तु।

– आर्यिका सुनिधिमती
(संघस्था : आचार्य गुप्तिनंदी जी गुरुदेव)

अभौतिक आत्म तत्त्व की खोज करने वाले मेरे गुरुदेव

सबके हृदयों पर विशेष स्थान प्राप्त करने वाले, इस **विश्व वसु**धा पर प्रतिक्षण आत्म अनुसंधान करने वाले, हर **समय आ**गम के ग्रन्थों के सार समन्दर में गहरे डुबकर अनुभव **रत्न प्राप्त** करने वाले तथा मोक्ष की ओर प्रतिक्षण कदम **बढ़ाने वा**ले आर्षमार्ग शिरोमणि आचार्य भगवन् कनकनन्दी **जी गुरुदेव** विश्व धर्म के विश्वगुरु द्वारा प्रतिपादित जैनधर्म के आध्यात्मिक वैज्ञानिक गुरु हैं।

विज्ञान नित्य नयी–नयी खोज करके मौलिक सामग्रियों की उपलब्धियाँ जन–जन तक पहुँचाता है वहीं मेरे महावैज्ञानिक गुरु भौतिक के साथ–साथ अभौतिक आत्मतत्त्व की उपलब्धियाँ प्राप्त करके स्वयं को ही नहीं अपितु जन–जन को आनन्द प्रदान कर रहे हैं।

स्वाध्याय किसे कहते हैं, यह सिर्फ गुरुदेव के श्री चरणों में ही सीख सकते हैं। दीक्षा लेने का उद्देश्य और दीक्षा की मंजिल मोक्ष तक कैसे पहुँचना यह खूब प्रेक्टिकल गुरुदेव स्वयं करते हैं तथा सभी शिष्य भक्तों को उपदेश भी देते हैं। भक्त से भगवान बनने की शिक्षा प्रदान करके शिष्यों पर जो उपकार गुरुदेव कर रहे हैं उसका ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता केवल उनकी भक्ति करके पुण्य का उपार्जन ही किया जा सकता है।

ऐसे अतिशय पुण्य का उपार्जन पूज्या **आर्यिका आस्थाश्री माताजी** द्वारा **'श्री कनकनन्दी जी विधान'** रचकर किया जा रहा है। माताजी ने आचार्य भगवन् के गुणरूपी मोतियों को विधानरूपी धागे में पिरोकर अपनी लेखन शक्ति को धन्य किया है। उनकी यह रचना उनको भक्त से भगवान बनाये यही प्रार्थना है मेरी। ऐसे महान् वैज्ञानिक आचार्य भगवन् के श्रीचरणों में मेरा त्रयभक्ति योगों से नमन, वन्दन और अभिनन्दन एवं पूज्या माताजी को वन्दामि।

– आर्यिका सुनीतिमती

13–4–2015 (पीलादर)

कनकनंदी विधान का मांडला

प.पू. वैज्ञानिक धर्माचार्य सिद्धान्तवेत्ता आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का विधान

(गीता छंद)

समता ही जिनकी साधना, वो हैं कनकनंदी गुरु।
जिनके वचन में शारदा, वो हैं महाज्ञानी गुरु॥
हर एक वस्तु को विशद, जो शोधते विज्ञान से।
उनकी करें हम अर्चना, तन-मन-वचन श्रद्धान से॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छन्द)

तिरते वही संसार से, जिनको मिले गुरु की शरण।
लेकर अनेकों द्रव्य हम, धोयें गुरुवर के चरण॥
हे शांत संत महन्त गुरुवर, कनकनंदी को नमन।
हम कर रहे तव अर्चना, होवे हमारा दुःख शमन॥1॥

ॐ ह्रीं श्री प.पू. वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव चरणेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनके सतत शुभ भाव हैं, चिंतन मनन एकाग्रता।
उनको चढ़ा शुचि गंध हम, पायें वही एकाग्रता॥ हे शांत..॥2॥

ॐ ह्रीं श्री .... चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जिसका न क्षय होवे कभी, वो पद मिले गुरु आपको।
सुरभित धवल तंदुल चढ़ा, हमको वही सुख प्राप्त हो॥ हे शांत..॥3॥

ॐ ह्रीं श्री .... अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव का मन है कमल, वात्सल की अति भावना।
जल, थल व कनकादि कमल से, कर रहे हम अर्चना॥
हे शांत संत महन्त गुरुवर, कनकनंदी को नमन।
हम कर रहे तव अर्चना, होवे हमारा दुःख शमन॥4॥

ॐ ह्रीं श्री .... पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना प्रकार मिठाईयाँ, चक्षु व मन को भा रही।
उसकी मधुरता हे गुरो !, तुम प्रेम रस दर्शा रही॥ हे शांत..॥5॥

ॐ ह्रीं श्री .... नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पक्षता के भाव से, रवि इस जगत का तम हरे।
वो भाव हैं गुरुदेव में, हम आरती उनकी करें॥ हे शांत..॥6॥

ॐ ह्रीं श्री .... दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हर एक वस्तु को लखें वे, धर्म और विज्ञान से।
गुरु जायेंगे लोकाग्र में, आठों करम को नाश के॥ हे शांत..॥7॥

ॐ ह्रीं श्री .... धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ भावना शुभ योग में, गुरुवर निरन्तर बढ़ रहे।
नाना तरह ले मिष्ठ फल, गुरु नाम ले हम बढ़ रहे॥ हे शांत..॥8॥

ॐ ह्रीं श्री .... फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, और दीप धूपादिक सजा।
लेकर फलादि अर्घ संग, हम सब चढ़ायेंगे ध्वजा॥ हे शांत..॥9॥

ॐ ह्रीं श्री .... अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **कनकनन्दी निश्चल गुरु, बालक सम मनहार।**
शान्तिधारा हम करें, अर्पें पुष्प अपार॥

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान के अर्घ

दोहा– यश कीर्ति गुरु आपकी, दिग दिगान्त में छाय।
मंडल पर पुष्पाञ्जलि, भक्त करे हर्षाय॥

अथ मंडलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(शेर छंद)

ना ख्याति पूजा लाभ की, गुरुवर को भावना।
होती जगत में इसलिये, इनकी प्रभावना॥
हम भक्ति भाव से करें, गुरुदेव का विधान।
आचार्य कनकनंदी को, हर शिष्य का प्रणाम॥1॥

ॐ ह्रूँ कनकनंदी सूरीभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुरुदेव द्वंद फंद से, नित दूर ही रहे।
कर्मों का बंध काटने वो, ज्ञानरत रहे॥ हम भक्ति...॥2॥

ॐ ह्रूँ सूरी गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये राग-द्वेष जीव का, संसार बढ़ाये।
समता से राग-द्वेष को, वे दूर हटायें॥ हम भक्ति...॥3॥

ॐ ह्रूँ सूरी स्वरूप गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्पक्ष भावना गुरु के, हृदय कमल में।
गंगा की धार के समान, आप अमल हैं॥ हम भक्ति...॥4॥

ॐ ह्रूँ सूरी सम्यक्त्वगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इक सत्य साम्य सौख्य का, गुरु मंत्र दे रहे।
तन-मन-वचन में आपके, यह मंत्र ही रहे॥ हम भक्ति...॥5॥

ॐ ह्रूँ सूरी ज्ञानगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधक से सिद्ध मैं बनूँ, अति श्रेष्ठ भावना।
गुरुदेव को बस मोक्ष में, जाने की कामना॥ हम भक्ति...॥6॥

ॐ ह्रूँ सूरी चारित्रगुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन व ज्ञान में विशेष, ज्ञानवान हैं।
चारित्रधारी आपको, मेरा प्रणाम है।।
हम भक्ति भाव से करें, गुरुदेव का विधान।
आचार्य कनकनंदी को, हर शिष्य का प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रूँ सूरी ध्यानेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करुणा करें हर जीव पे, करने को जो कल्याण।
हो जाये मोह क्षय मेरा, हो मोक्ष में प्रयाण।। हम भक्ति...।।8।।

ॐ ह्रूँ सूरी पात्रेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कितनी उदारता हे देव !, आपमें भरी।
पाने उदारता वही ये, अर्चना करी।। हम भक्ति...।।9।।

ॐ ह्रूँ सूरी पंचाचार गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्वाग्रहो हठाग्रहों से, दूर जो रहे।
अपूर्व ज्ञान आपके, हर वाक्य में रहे।। हम भक्ति...।।10।।

ॐ ह्रूँ सूरी द्रव्य गुणेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुरुतियों कुरुढ़ियों पे, कर रहे प्रहार।
छोड़ो सभी ये रुढ़ियाँ, लाओ नये विचार।। हम भक्ति...।।11।।

ॐ ह्रूँ सूरी शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म में दिखावा, और ढ़ोंग ना करो।
गुरुदेव का कहना, सभी से सरलता धरो।। हम भक्ति...।।12।।

ॐ ह्रूँ सूरी त्रिकाल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ ढ़ोंग वा पाखंड, वहाँ धर्म नहीं है।
यह बात मैंने ना कही, जिनवर ने कही है।। हम भक्ति...।।13।।

ॐ ह्रूँ सूरी त्रिलोक मंगल शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनधर्म कार्य में कभी ना हो, घृणा का भाव।
गुरुदेव कह रहे हैं तजो, प्राणियों विभाव।। हम भक्ति...।।14।।

ॐ ह्रूँ सूरी मंत्र स्वरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

किसी से ना रखो व्यर्थ की, अपेक्षा भी कभी।
संक्लेश भाव होते हैं, उपेक्षा में तभी।।
हम भक्ति भाव से करें, गुरुदेव का विधान।
आचार्य कनकनंदी को, हर शिष्य का प्रणाम।।15।।

ॐ ह्रूँ सूरी मंत्र गुणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आते धनी गरीब बाल, वृद्ध जन सभी।
हे सीख गुरु नाम की, इच्छा तजो सभी।। हम भक्ति...।।16।।

ॐ ह्रूँ सूरी धर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपमान निंदा सर्व ही, खोटे तजो विचार।
सद्भावना व धैर्य से, करते धरम प्रचार।। हम भक्ति...।।17।।

ॐ ह्रूँ सूरी चिदानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यश कीर्ति प्रसिद्धि वा, नाम नहीं चाहिये।
हे नाथ ! आपके समान, भाव चाहिये।। हम भक्ति...।।18।।

ॐ ह्रूँ सूरी समता नंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संतोष में ही शांति है व, शांति में आनंद।
गुरुदेव मौन रहके, पाये साम्य सुखानंद।। हम भक्ति...।।19।।

ॐ ह्रूँ सूरी ज्ञानानंदाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज आत्म की शुद्धि, बढ़ाये ध्यान साधना।
ऐसे गुरु की हम करेंगे, नित आराधना।। हम भक्ति...।।20।।

ॐ ह्रूँ सूरी साम्यभावाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नरेन्द्र छंद)

जन्म जरा मृत रोग नशाने, मैंने अपनाई दीक्षा।
नहीं मनाऊँ पर्व स्वयं के, गुरुवर देते ये शिक्षा।।
करी प्रतिज्ञा गुरुवर तुमने, नियम अनेकों अपनायें।
सूरि कनकनंदी गुरुवर की, अर्चा करने हम आये।।21।।

ॐ ह्रूँ सूरी सत्यरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाँचों परमेष्ठी ही मेरे, भाई बांधव कहलाये।
रत्नत्रय है वैभव मेरा, लोक शिखर घर कहलाये॥
करी प्रतिज्ञा गुरुवर तुमने, नियम अनेकों अपनायें।
सूरि कनकनंदी गुरुवर की, अर्चा करने हम आये॥22॥

ॐ ह्रूँ सूरी शुद्धरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साम्यभाव के धारी गुरुवर, सर्व परिग्रह त्यागी हैं।
भौतिक कार्य करे ना कोई, उनके हम अनुरागी हैं॥ करी...॥23॥

ॐ ह्रूँ सूरी सोऽहंरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदा चिट्ठा करूँ कभी ना, ना ही कोई आडम्बर।
ज्ञानी गुरुवर कनकनंदी जी, बाह्याभ्यंतर दिगम्बर॥ करी...॥24॥

ॐ ह्रूँ सूरी हंसाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमाशील हो समताधारी, परम सत्य को समझाते।
स्वाभिमान क्या अभिमान क्या, श्री गुरुवर ये समझाते॥ करी...॥25॥

ॐ ह्रूँ सूरी विशिष्टज्ञानाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सरल स्वभावी गुरुवर तुमको, कोई जान नहीं पाये।
अज्ञानी मोही सब प्राणी, क्या-क्या तुमको कह जायें॥ करी...॥26॥

ॐ ह्रूँ सूरी अमृतचंद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मैं हूँ शुद्ध स्वरूपी आतम, मैं निश्चय नय में आये।
सोऽहं मय बनने ही गुरुवर, मुनि मुद्रा को अपनाये॥ करी...॥27॥

ॐ ह्रूँ सूरी सत्यबोधाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माइक मंच मुझे ना भाये, और ना विज्ञापन आदि।
नाम दिखावा जहाँ भरा है, सबसे बड़ी वहाँ व्याधी॥ करी...॥28॥

ॐ ह्रूँ सूरी सुधाचंद्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति रहे अंतर में जिससे, ऐसा कार्य रचाऊँगा।
हो संक्लेश भावना जिसमें, काम न वो कर पाऊँगा॥ करी...॥29॥

ॐ ह्रूँ सूरी शुद्धरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सच्ची माँ जिनवाणी मेरी, वो ही मार्ग बताती है।
आगम सम्मत कार्य करूँ मैं, ये जीवन की थाती[1] है॥
करी प्रतिज्ञा गुरुवर तुमने, नियम अनेकों अपनायें।
सूरि कनकनंदी गुरुवर की, अर्चा करने हम आये॥30॥

ॐ ह्रूँ सूरी सिद्धान्त ज्ञानधारकाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञान ध्यान लेखन प्रवचन में, शुभ उपयोग लगाते हैं।
शिविर और संगोष्ठी द्वारा, धर्म विज्ञान बताते हैं॥ करी...॥31॥

ॐ ह्रूँ सूरी वात्सल्यमूर्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रहे सदा एकान्त वास में, मौन साधना करते हैं।
स्वात्म ध्यान की सिद्धि हेतु, ऊर्जा संचय करते हैं॥ करी...॥32॥

ॐ ह्रूँ सूरी अमृत तत्त्वाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हो संकल्प विकल्प जहाँ पर, वहाँ कभी ना जाते हैं।
पंथवाद से दूर रहे नित, मोक्ष मार्ग दिखलाते हैं॥ करी...॥33॥

ॐ ह्रूँ सूरी दशधर्माय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

त्यागी जो भी वस्तु गुरु ने, उसका मोह मिटाते हैं।
निज आतम को पाने गुरुवर, गहरा ध्यान लगाते हैं॥ करी...॥34॥

ॐ ह्रूँ सूरी शुद्धरूपाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सांसारिक जीवों से गुरुवर, सतत दूर ही रहते हैं।
धर्म छोड़कर कोई चर्चा, गुरुवर कभी ना करते हैं॥ करी...॥35॥

ॐ ह्रूँ सूरी सत्यमहाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कितना पुण्य किया गुरुवर ने, ज्ञान अलौकिक पाया है।
जैनधर्म ही परम सत्य है, सबको ये बतलाया है॥ करी...॥36॥

ॐ ह्रूँ सूरी अचौर्य महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सम्पत्ति

सूक्ष्म विषय का करें विवेचन, अनुभव से बतलाये ये।
ज्ञानी गुरुवर कनकनंदी को, रागी समझ न पाये हैं।
करी प्रतिज्ञा गुरुवर तुमने, नियम अनेकों अपनायें।
सूरि कनकनंदी गुरुवर की, अर्चा करने हम आये॥37॥

ॐ ह्रूँ सूरी ब्रह्मचर्य महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तुच्छ बुद्धि के प्राणी हम सब, तुमको समझ न पाये हैं।
क्षमा करो हे ज्ञानी ऋषिवर, शरण तुम्हारी आये हैं॥ करी...॥38॥

ॐ ह्रूँ सूरी अपरिग्रह महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हँसते-हँसते गुरुवर हमको, धर्म रहस्य बताते हैं।
गहन विषय को सरल बनाकर, श्रुत की घुट्टी पिलाते हैं॥ करी...॥39॥

ॐ ह्रूँ सूरी ज्ञान मंगलेभ्यो महाव्रताय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कोई घटना घटे बाद में, पहले आप बताते हैं।
ऐसी प्रखर बुद्धि है गुरु की, हम उनको सिर नाते हैं॥ करी...॥40॥

ॐ ह्रूँ सूरी ज्ञान लोकोत्तमेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनकनंदी गुरुवर के जैसा, कोई संत नहीं होगा।
भेदभाव और तेरा-मेरा, उनके पास नहीं होगा॥ करी...॥41॥

ॐ ह्रूँ सूरी दर्शनाचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना करते कभी निंदा चुगली, करते नहीं अनादर वो।
उनको अर्चें विनय भाव से, पूजें गुण रत्नाकर को॥ करी...॥42॥

ॐ ह्रूँ सूरी ज्ञानाचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लंद फंद में कभी न उलझे, उलझे को भी सुलझायें।
प्रेम और सौहार्द्र भावना, सबमें आप जगा जायें॥ करी...॥43॥

ॐ ह्रूँ सूरी चारित्राचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

संत मनीषी वैज्ञानिक जन, अध्ययन करने आते हैं।
पढ़ें आपसे जो-जो प्राणी, अहम भाव विनशाते हैं॥ करी...॥44॥

ॐ ह्रूँ सूरी तपाचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्विकार बालक सम गुरुवर, निर्मल मन के धारी हो।
वैज्ञानिक आचार्य देव तुम, जय-जय सदा तुम्हारी हो॥
करी प्रतिज्ञा गुरुवर तुमने, नियम अनेकों अपनायें।
सूरि कनकनंदी गुरुवर की, अर्चा करने हम आये॥45॥

ॐ ह्रूँ सूरी वीर्याचार्याय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय आपकी देख गुरुवर, मनवा गद-गद होता है।
विनय भाव से करे वंदना, गुरु सम कोई न होता है॥ करी...॥46॥

ॐ ह्रूँ सूरी मनोगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ना प्रमाद है तनिक आपमें, नित श्रम करते रहते हैं।
पढ़ना लिखना और पढ़ाना, नव्य सृजन नित करते हैं॥ करी...॥47॥

ॐ ह्रूँ सूरी वचनगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अहो भाग्य सौभाग्य हमारा, तुम जैसे गुरु पाये हैं।
गुरु चरणों में ज्ञान प्राप्त कर, केवल ज्योति जगायेंगे॥ करी...॥48॥

ॐ ह्रूँ सूरी कायगुप्तये नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सूरि पाठक और मुनि के, व्रत का पालन करते हैं।
अनुशासन आदर्श आपका, फिर भी समता धरते हैं॥ करी...॥49॥

ॐ ह्रूँ सूरी अनेक गुणधारकेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लिखे अनेकों ग्रंथ आपने, गीताञ्जलि में गीतायें।
चऊँ अनुयोग समाये इसमें, विषय न कोई अछूता है॥ करी...॥50॥

ॐ ह्रूँ सूरी सर्वगुण शरणाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ्य (जोगीरासा छंद)

कनकनंदी की ज्ञान रश्मियाँ, ज्ञान किरण फैलाये।
वैज्ञानिक आचार्य हमारे, सबको धर्म सिखायें॥
साम्यभाव ही सुख स्वभाव है, यही गुरु बतलाये।
कनक रजत की थाल सजा हम, गुरु को अर्घ चढ़ायें॥

ॐ ह्रूँ परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव चरणेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– ज्ञान मिले गुरु आप सम, दो मुझको आशीष।
इसी भाव से आपको, सदा झुकाऊँ शीष॥

शान्तये शान्तिधारा, दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य मंत्र– ॐ ह्रूँ कनकनंदी सूरिभ्यो नमः। (9, 27, 108 बार जाप करें।)

जयमाला

दोहा– वैज्ञानिक आचार्य श्री, कनकनन्दी ऋषिराज।
उनकी जयमाला पढ़ें, पाने मुक्ति स्वराज॥

(नरेन्द्र छंद)

धर्मनिष्ठ आचार्य हमारे, सरल स्वभावी न्यारे।
कनकनंदी वैज्ञानिक सूरी, तुम हो ज्ञान सितारे॥
बड़े-बड़े ज्ञानी विज्ञानी, गुरु के सन्मुख पढ़ते।
सत्य साम्य समता ही सुख है, मंत्र आपसे सुनते॥1॥

जिनवाणी से प्रेम अति है, माने सच्ची माता।
करें आप स्वाध्याय सतत ही, तुम हो शिक्षादाता॥
प्राकृतिक सौन्दर्य दृश्य सब, गुरुवर के मन भाये।
जंगल पर्वत और गाँव में, गुरुवर समय बितायें॥2॥

तन-मन वा बौद्धिक विकास हित, योगाभ्यास रचाते।
धर्म दर्श विज्ञान शिविर में, सबको मार्ग दिखाते॥
ओजस्वी व्यक्तित्व आपका, कुंदकुंद सम ज्ञानी।
तर्क कुशलता अकलंक जैसी, निज आतम के ध्यानी॥3॥

वीरसेन स्वामी को गुरुवर, वाग्मी गुरु बनायें।
अलग-अलग विषयों का चिंतन, उनपे गीत बनायें॥

छोटे-मोटे हर प्राणी से, गुरुवर हमें सिखायें।
वसुधा के हर इक कण-कण से, अनुभव दिव्य करायें॥4॥

घास और मिट्टी में गुण हैं, अवगत हमें करायें।
गुणग्राही बन करके गुरुवर, वात्सल्य भाव जगायें॥
विनय नम्रता भरी आपमें, मीठी-मीठी वाणी।
बालक होकर ज्ञान वृद्ध हैं, सत्य शिवं श्रद्धानी॥5॥

जग में रहकर जग से ऊपर, गुरुवर ये निर्मोही।
निस्पृहता आदर्श आपका, आडम्बर ना कोई॥
गुरुवर कार्य समय पर करते, सबको ये सिखलाते।
आध्यात्मिक ऊर्जा से हरपल, उपलब्धि नव पाते॥6॥

वैज्ञानिक जन गुरु चरणों में, ज्ञान देशना पायें।
परा ज्ञान विज्ञान जानकर, अखिल विश्व फैलायें॥
क्या हिन्दु और क्या श्वेताम्बर, सब तुम शरणा आये।
सत्य समझने गुरु के द्वारे, सब देशों से आये॥7॥

जिज्ञासु बन जो भी आये, समाधान वो पाये।
हास्य मार्ग से गुरुवर सबको, सम्यक् मार्ग बताये॥
साधु साध्वी कोई आये, वो उनका बन जाये।
गुरुवर तेरी गुण गाथा हम, पूरी ना कह पाये॥8॥

ॐ ह्रीं परम पूज्य वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव चरणेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(गीता छंद)

गंभीर हैं ! गुरु शांत हैं ! ये क्रांतिकारी संत हैं।
ये बोलते जिनतीर्थ हैं, सबके लिये भगवंत हैं॥
गुरुवर तुम्हारे ज्ञान का, कोई न पाये पार है।
त्रय योग से 'आस्था' नमे, वंदन तुम्हें शत बार है॥

इत्याशीर्वादः दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

विधान की प्रशस्ति

दोहा

आदि शांति पारस प्रभो, चौबीसों भगवान।
श्री गणधर माँ शारदा, सबको करूँ प्रणाम॥1॥

महावीरकीर्ति गुरु, सूरी कुन्थु ऋषिराज।
उनके शिष्यों में प्रथम, सूरि 'कनक' ऋषिराज॥2॥

गुप्ति गुरु की प्रेरणा, मिला मुझे आशीष।
सब गुरु के पद पद्म में, सदा झुकाऊँ शीश॥3॥

गुरुवर के शुभ दर्श से, बने ये मेरे भाव।
मिले सदा गुरुदेव के, वत्सल तरु की छाँव॥4॥

देवपुरा शुभ ग्राम में, आरम्भ किया विधान।
तीन दिवस में हो गया, कनकनन्दी विधान॥5॥

शिष्या मैं गुरु आपकी, यह है मेरा भाग्य।
ज्ञानी गुरु की भक्ति से, जागे मम सौभाग्य॥6॥

जब तक सूरज चाँद है, हो गुरुवर का नाम।
'आस्था' को गुरु संग मिले, सत्य साम्य सुख धाम॥7॥

'इति अलम्'

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव का चालीसा

रचनाकार : आचार्य गुप्तिनंदी

दोहा- ॐ ह्रीं को नित नमूँ तीर्थंकर चौबीस।
जिनवाणी को नमन कर वन्दूँ सर्व मुनीश॥
कनकनंदी आचार्य हैं, शिक्षक श्रमण महान्।
उनका चालीसा पढ़ूँ, बनने को भगवान॥

(चौपाई)

जय-जय कनकनंदी गुरु ज्ञानी, सत्य शोध बोधक विज्ञानी।
उनका चालीसा हम गायें, गुरु सम सत्य ज्ञान हम पायें॥1॥
सूरि विमलसागर गुरु राया, मधुबन तुमने दर्शन पाया।
उनका प्रथम दर्श जब पाया, मोक्षमार्ग तुमने अपनाया॥2॥
उनके संग विजयामति माता, प्रथम शिक्षिका विद्यादाता।
प्रथम ज्ञानदात्री वो माता, मानो वो कौशल्या माता॥3॥
सूरि कुन्थुसागर गुरु ज्ञानी, वे तुम क्षुल्लक मुनिपद दानी।
फिर शिक्षक आचार्य बनाया, विस्तृतनंदी संघ बनाया॥4॥
गुरुवर तुमको हीरा माने, नंदी संघ का शिक्षक जाने।
नंदी संघ आधार हमारे, कुन्थु कनक दो गुरुवर प्यारे॥5॥
तुमने बहु मुनि रत्न बनाये, आचार्यों को आप पढ़ायें।
पद्मनंदी वा देवनंदी जी, कुमार विद्या कुमुदनंदी जी॥6॥
गुणधरनंदी वा गुणनंदी, गुप्तिनंदी मैं शरणानंदी।
इत्यादिक आचार्य घनेरे, वे सब तुम चरणों के चेरे॥7॥
मुनि सुविज्ञ अध्यात्मनंद जी, आज्ञासागर सच्चिदनंदी।
इत्यादिक शत-शत मुनिरायी, तुम सन्निध में प्रज्ञा पायी॥8॥
गणिनी आर्या राज क्षमाश्री, धर्मसुता आर्या आस्थाश्री।
अम्ब सुवत्सल सुनिधि सुनीति, सुवीक्ष्य सीखे धर्म सुनीति॥9॥

सुयशगुप्त के वाग्मी गुरु हो, चन्द्रगुप्त के दादा गुरु हो।
धन्य-धन्य तुम मेरे गुरु हो, तुम जग के परदादा गुरु हो॥10॥
षट्दर्शन के तुम अध्येता, श्रमण सूरि वैज्ञानिक नेता।
तुम अनुभवसागर गुरूराया, जग में अनुभव रत्न लुटाया॥11॥
उच्च कोटि की प्रज्ञा धारें, कनकनंदी गुरुदेव हमारे।
निरभिमान पर स्वाभिमानी, निस्पृह सरल महाविज्ञानी॥12॥
तुमने सर्व विषय को जाना, सर्व शास्त्र भाषा को जाना।
शास्त्राभ्यास करें करवाते, ज्ञानामृत दिन-रात लुटाते॥13॥
अनेकांत मत तुमको प्यारा, स्याद्वाद है चिह्न तुम्हारा।
दर्शन धर्म विज्ञान बताये, वैज्ञानिक को आप लुभायें॥14॥
बहु सूरि मुनि तुमको ध्यायें, वैज्ञानिक तुम शरणा आये।
जैन अजैनों को गुरु भायें, बालक युवक तुम्हें रिझायें॥15॥
यथाजात बालक व्रत धारी, बालक विद्यार्थी अविकारी।
जो भी आप शरण में आये, यश प्रज्ञा सुख समता पाये॥16॥
आप महालेखक गुरूरायी, महा कवीश्वर ज्ञान प्रदायी।
लिखे समीक्षा ग्रंथ अनेकों, गीतांजलि भी लिखी अनेकों॥17॥
सबमें आगम ज्ञान भरा है, उत्तम अनुभव ज्ञान भरा है।
स्व-पर विश्वकल्याण भरा है, सत्य साम्य सुख कोष भरा है॥18॥
देश-विदेश जगत के प्राणी, तुमको पूज बने सुज्ञानी।
बिन बोले सहयोग करें वे, मुक्ति रमा का योग वरें वे॥19॥
हम भी आप शरण में आयें, सत्य साम्य सुख अमृत पायें।
'गुप्तिनंदी' नित गुरु गुण गायें, निज अज्ञान तिमिर विनशायें॥20॥

दोहा- कनकनंदी गुरुदेव का, चालीसा सुखदाय।
पाठ करो दिन-रात सब, श्रद्धा भाव लगाय॥
निस्पृह साधक संत को, जो भी निशदिन ध्याय।
ज्ञानामृत फल वो वरे, अंत बने जिनराय॥

जाप्य मंत्र :- ॐ ह्रूँ कनकनंदी सूरिभ्यो नमः।

आचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की गीतांजलि

–आचार्य गुप्तिनंदी जी
7 अप्रैल 2015 (देवपुरा)

(तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा...)

समभाव सत्य जिनका वैभव, हम उनकी गाथा गाते हैं।
आचार्य कनकनंदी गुरु की, हम गीतांजलि सुनाते हैं॥

आचार्य कुन्थुसागर गुरुवर, उनके तुम शिष्य कहाते हो।
हो नंदी संघ के शिक्षक तुम, सबको सत्यार्थ दिखाते हो॥
जिन्हें मान रही सारी दुनिया, हम उनको शीश झुकाते हैं॥ आचार्य..॥1॥

जिनके महान मुखमण्डल में, ब्रह्माण्ड उभर कर आया है।
जिनके विशाल अंतस्तल में, वैश्विक कल्याण समाया है॥
जो स्व–पर विश्व उत्थान भाव, दिन–रात सदा ही भाते हैं॥ आचार्य..॥2॥

जो कलम उठायी है तुमने, अब तक विश्राम न पायी है।
कई ग्रन्थ और गीतांजलियाँ, तुमने गुरुदेव बनायी हैं॥
श्री महाकवि लेखक महान, मेरे गुरुदेव कहाते हैं॥ आचार्य..॥3॥

दुनिया में ऐसा विषय नहीं, जो तुमसे रहा अछूता है।
शिशु से वैज्ञानिक तक हरजन, आ तुम चरणों को छूता है॥
अनुभव के सागर श्री गुरुवर, अनुभव के रत्न लुटाते हैं॥ आचार्य..॥4॥

स्वाध्याय तपस्वी श्री गुरु को, ख्याति पूजा ना भायी है।
बालक विद्यार्थी बन तुमने, शुद्धात्म भावना भायी है॥
'गुप्तिनंदी' आदि बहुजन, इन मुक्ति दूत को ध्याते हैं॥ आचार्य..॥5॥

***

सच्चिदानंदमय 'मैं' स्वभावी
श्रमणाचार्य श्री कनकनंदी जी गुरुदेव की आरती

(तर्ज : मिलो ना तुम तो...)

वैज्ञानिक आचार्य हमारे, कनकनंदी गुरु न्यारे (प्यारे)
करें हम आरती ऽऽऽ...2

कनक रत्न की थाल सजाकर... जगमग दीप सजायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2 (ध्रुव)

कुंथु गुरु के नंदन, हीरा हो तुम नन्दी खान के।
दादा गुरु हो स्वामी, इस वसुधा पे विज्ञान के॥
सत्य साम्य सुख अमृत पाने, गुरु शरणा हम आयें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

श्रेष्ठ मेधावी गुरुवर, स्वावलम्बी सत्यग्राही आप हो।
सच्चिदानन्द एक हूँ मैं, करते सदा इसका जाप हो॥
''मैं'' में सिद्ध स्वरूप छिपा है, सबको आप बतायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

कितनी उदारता है, हे ज्ञानयोगी ! गुरु आप में।
राग-द्वेष पाप माया, आते न गुरुवर तेरे पास में॥
कवियों के गुरु महाकवि हो, अनुभव रत्न लुटायें।
करें हम आरती ऽऽऽ...2

सर्व विद्या के दाता, मुख में बसा ब्रह्माण्ड है।
समता बिना ना कोई, सार है धर्म क्रियाकाण्ड में॥
पूर्वाचार्य सम ज्ञान भरा है, 'आस्था' से हम पायें
करें हम आरती ऽऽऽ...2

***

सर्वगुण सम्पन्न मेरे गुरुवर

–आ. आस्थाश्री
2-4-2015, देवपुरा

(तर्ज : दे दी हमें आजादी बिना...)

कुंथु गुरु के लाल की महिमा अति विशाल।
आचार्य कनकनंदी करें नित नये कमाल॥
अनमोल सूत्र ज्ञान के पाये गुरु के द्वार।
आचार्य कनकनंदी को वंदन है बार-बार॥

चिन्तन विशेष आपका है ज्ञान में विज्ञान।
जिनधर्म के हर सूत्र में छिपा हुआ विज्ञान॥
उस परम सत्य को बताने कर रहे प्रचार। आचार्य....

गुरु आप जैसा विश्व में कोई ना संत है।
इस आर्ष मार्ग का कभी होगा ना अंत है॥
जिनधर्म की गीतांजली आगम का है उपकार। आचार्य....

समता सरलता आपमें विशेष रूप से।
लगते हो आप तो हमें महावीर रूप में॥
चरणों में आपके सदा झुकता रहा संसार। आचार्य....

हो स्वावलम्बी आपकी वाणी में स्याद्वाद।
जाते नहीं गुरु वहाँ जहाँ पे हो विवाद॥
ना ख्याति नाही लाभ ना ही चाहते सत्कार। आचार्य....

आते हैं वैज्ञानिक अनेक आपसे पढ़ने।
जिनधर्म के जिनसूत्र को विज्ञान में भरने॥
'आस्था' भी यही अर्ज करें करना गुरु उद्धार। आचार्य....

***